मालाबार नौसेनिक अभ्यास: हिन्द-प्रशांत महासागर क्षेत्र में शक्ति प्रदर्शन

राखी कुशवाह, शोधार्थिनी
समाजशास्त्र और राजनीती विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा – 282005 **उत्तर प्रदेश**

शोध सारांश

मालाबार अभ्यास भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान के मध्य एक त्रिपक्षीय नौसेनिक वार्षिक अभ्यास हैं। जो समुन्द्र में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। प्रारम्भ में मालाबार अभियान का लक्ष्य समुन्द्री डाकू, आतंकवाद का प्रतिरोध, समुन्द्र में सुनामी का आना इत्यादि समस्या उत्पन्न होने पर तीनों देश एक साथ मिलकर समस्या का समाधान करेंगे। जिसको पूर्ण करने के लिए अंतर-क्षमता उत्पन्न होना अति महत्वपूर्ण हैं, लेकिन 21 वीं शताब्दी में मालाबार अभ्यास का मुख्य उद्देश्य चीन की वैश्विक स्तर पर बडती प्रतिक्रियाओं को काउंटर करना हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत और जापान ने हिन्द-प्रशांत महासागर क्षेत्र में चीन की बडती समुंद्री उपस्थिति पर अपना ध्यान आकर्षित किया हैं। चीन अपने राष्ट्र हितों को प्राथमिकता देते हुए हिंद महासागर और प्रशांत महासागर में अपनी स्वायत्तता को कूटनीतिक रूप से स्थापित करना चाहता हैं। मुख्य रूप से इस शोध पत्र में 2017 मालाबार अभ्यास के महत्व का वर्णन किया हैं। जिसका मुख्य उद्देश्य हिंद और प्रशांत महासागर में चीन के बड़ते प्रयासों को नियंत्रित करना हैं। वर्तमान मालाबार अभ्यास चीन के सम्बन्ध में था। जिसे वर्तमान अवधि में एक शक्ति खेल के रूप में पहचान सकते हैं।

प्रस्तावना:

मालाबार नौसेनिक अभ्यास एक त्रिपक्षीय नौसेनिक अभियान है। तीन देश भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान इसके स्थायी सदस्य के रूप में पहचाने जाते है। इसके अतिरिक्त अस्थायी सदस्य ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, फिलिपिन्स हैं। मालाबार अभियान भारत, अमेरिका और जापान की नौसेनाओं के मध्य एक वार्षिक अभ्यास हैं। मालाबार नौसेनिक अभियान भारत और अमेरिका के मध्य व्दिपक्षीय अभ्यास के रूप में भारतीय पूर्व प्रधानमंत्री पी० वी० नरसिम्हा राव की पहल पर सन् 1992 में प्रस्ताव अमेरिका को सोफा था। इसके अतिरिक्त जापान को सन् 2015 में स्थायी सदस्य के रूप में स्वीकार किया गया।[1]

भारतीय और अमेरिकी नौसेना मालाबार संयुक्त अभ्यास का आयोजन सन् 1992 में प्रस्तुत किया गया, लेकिन इस अभ्यास को नियमित रूप से प्रतिवर्ष सन् 2002 से कार्यक्रम के रूप में आयोजित किया जाता है। इसी के तत्पश्चात से मालाबार अभियान को मजबूत किया गया था, जिसका लक्ष्य युध्दाभ्यास, संचार

अभ्यास, समुद्री अभ्यास, आतंकवादी, सुनामी इत्यादि समस्याओं का एक साथ सहयोग कर समाधान करना हैं।[2]

मालाबार अभियान का प्राथमिक उद्देश्य अंतर-क्षमता को समझना है यानि की मालाबार अभ्यास के माध्यम से तीनों देश आपस में यह जानने की कोशिस करते हैं की इन तीनों देशों की नौसेना की संरचना क्या है यानि की यह तीनों देश एक दुसरे राष्ट्र की नौसेना से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करते है। जिससे की पेचीदा समस्याओ का समाधान बिना समय के व्यक्त किये किया जा सके। इसके अतरिक्त तीनों देश की नौसेनाएं किस प्रकार से कार्यरत है इत्यादि। तीनों देश आपस में एक दुसरे की नौसेना से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करना और उनकी नौसेना को समझना है।[3]

मालाबार एक ऐसा अभ्यास है जिसका आयोजन प्रतिवर्ष जल में किया जाता है। भारत, अमेरिका - जापान के साथ ना केवल अभ्यास करता है बल्कि ऐसे अभ्यासों का भी आयोजन करता है, जो चीन को नाखुश करने के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वर्तमान में चीन समुंद्री मार्ग से व्यापार पर निर्भर है, जो अधिकांश दक्षिण चीन सागर के माध्यम से स्ट्रेट ऑफ मलक्का के जरिये व्यापार करता हैं। वर्तमान में चीन का मानना है कि दक्षिण चीन सागर में स्थित ताईवान और फिलिपिन्स व्दिपसमुह पर अपना नियंत्रण कर अधिपत्य स्थापित करना चाहिए। इस क्षेत्र में चीन के राष्ट्रहित हैं।[4] क्योंकि भविष्य में शायद ऐसा भी हो सकता है की मालाबार अभियान में दक्षिण चीन सागर के व्दिपसमुह शामिल हो जाये। इसे चीन स्वयं के लिए एक खतरे के रूप में चुनौती मानता हैं। इसी आधार पर चीन ने अपना दखल हिंद-प्रशांत महासागर क्षेत्र में बड़ा दी हैं।

भारत, ऑस्ट्रेलिया के माध्यम से त्रिपक्षीय मालाबार को चतुर्भुज मालाबार के माध्यम से "स्वतन्त्र और खुला भारत प्रशांत क्षेत्र" को बढावा देने का एक उचित अवसर होगा। भारत मुख्य रूप से "चतुर्भुज कनेक्टिविटी" के द्रष्टिकोण पर बल देता हैं। आपस में एक दुसरे देशों के साथ और दुसरे भागीदारों के साथ शांति, स्थिरता और सम्रध्दी को बढावा देने के लिये उनके मूल्यों पर बल देता हैं।[5]

मालाबार नौसेनिक अभ्यास क्या हैं?

मालाबार नौसेनिक अभ्यास एक ऐसा अभ्यास है जो जल में स्थित रहकर किया जाता हैं। इस त्रिपक्षीय मालाबार का मूल उद्देश्य आतंकवाद प्रतिरोध और समुंद्री डाकूओं से समुन्द्र की रक्षा करना है। इसके अतिरिक्त मालाबार अभ्यास का उद्देश्य प्रक्रियाओं और तकनीकी संगतता के सन्दर्भ में 'अंतर-क्षमता' को समझना हैं। यदि भविष्य में सुनामी आ जाये या या फिर समुद्री डाकू भारतीय व्यापार विमान पर आक्रमण कर दे तो उस समय तीनों देश (भारत, अमेरिका और जापान) एक दुसरे देशों की मिलकर आपस में सहयता कर सकते हैं। इस प्रकार के संयुक्त अभ्यासों को नौसेनिक बलों की क्षमता और संरचना के एक प्रयास के रूप में हैं, और प्रमुख शक्तियों के खिलाफ हेज भी हो सकती है।[6]

एतिहासिक प्रष्ठभूमि:

वार्षिक मालाबार नौसेनिक अभ्यास अमेरिका, भारत और जापान का संयुक्त अभ्यास हैं। हालांकि पारम्परिक रूप से इस अभ्यास की शुरुआत भारत और अमेरिका के मध्य हुई थी। मालाबार अभ्यास कि पहल पूर्व प्रधानमंत्री पी० वी० नरसिम्हा राव व्दारा यह विचार दिया गया कि भारत को अमेरिका के साथ संयुक्त नौसेनिक अभ्यास करना चाहिए। यह प्रस्ताव सन् 1992 में अमेरिका को दिया गया, जिसे अमेरिकी राष्ट्रपति एच० डब्लु० बूश ने सन् 1994 में स्वीकार किया।[7]

भारत व्दारा मालाबार नौसेनिक अभ्यास का मुख्य कारण था, विश्व के दो सर्वोच्च शक्तिशाली राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ, इन दो प्रमुख शक्तियों में से सोवियत संघ का पतन सन् 1991 में हो गया था। सोवियत संघ के पतन के तत्पश्चात वैश्विक राजनीति बदल चुकी थी और वैश्विक स्तर पर केवल संयुक्त राज्य अमेरिका एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में उभरा। वर्तमान में भी अमेरिका दुनियां की सबसे बड़ी सर्वोच्च शक्ति के रूप में हैं। इसी आधार पर भारत ने अपने राष्ट्रहितों को सर्वोपरि रखते हुए अमेरिका को मालाबार अभियान का प्रस्ताव सोफा था।

मालाबार अभ्यास दो कारणों से महत्वपूर्ण था: प्रथम, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य परम्परागत रूप से एक परिवर्तनशील बदलाव का प्रतिक था, क्योंकि शीत युध्द के दौरान सन् 1971 के "बांग्लादेश मुक्ति अभियान युध्द" में भारत के खिलाफ सैनानी युध्द पोत बंगाल की खाड़ी में तैनात कर दिया था। द्वितीय, मालाबार अभ्यास 2007 में अभूतपूर्व हवाई रक्षा अभ्यास, एंटी-पनडुब्बी युध्द प्रशिक्षण और जहाजों और विमानों के मध्य कई व्यावसायिक आदान-प्रदान शामिल थे।[8]

सन् 1994 के तत्पश्चात से प्रतिवर्ष मालाबार नौसेनिक अभ्यास का आयोजन किया जाता हैं, लेकिन सन् 1994 से 1998 के मध्य केवल तीन बार ही इस अभ्यास का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य कारण था कि अमेरिका के सम्बन्ध पाकिस्तान के साथ अधिक मधुर व सुद्रण थे। अमेरिका पाकिस्तान को नाखुश करना नहीं चाहता था। इसके अतिरिक्त भारत व्दारा सन् 1998 में पोखरण-2 परमाणु परिक्षण किया गया था।[9] इसके आधार पर अमेरिका व्दारा यह निर्णय लिया गया कि भारत के साथ मालाबार अभ्यास पर विराम किया जायें, इसके अतिरिक्त अमेरिका द्वारा भारत पर कई पाबन्दियाँ भी लागु की गयी जैसे भारत को उर्जा और तकनीकि हस्तांतरण न करना, व्यापार के आयात-निर्यात पर रोक इत्यादि पाबंदिय घोषित कि गयी। हालांकि सन् 2002 में संयुक्त राज्य अमेरिका व्दारा ये पाबन्दियाँ हटा दी गयी।

सन् 2002 में मालाबार अभ्यास प्रारम्भ हुआ। जिसका प्रमुख कारण सन् 2001 में 9/11 आतंकवादी हमला अमेरिका में अलकायदा संगठन द्वारा किया गया। अमेरिका ने 9/11 हमले के तत्पश्चात से भारत के साथ मालाबार नौसेनिक अभ्यास सन् 2002 में अमेरिकी राष्ट्रपति बुश द्वारा प्रारम्भ करने का निर्णय किया।

सन् 2002 से वर्तमान अवधि तक प्रतिवर्ष मालाबार अभियान का आयोजन किया जाता हैं।[10]

चीनी कारक:

सन् 2002 से 2005 के मध्य मालाबार अभ्यास का उद्देश्य देशों के साथ सहकारी सुरक्षा सम्बन्ध स्थापित करना, राष्ट्रिय हितों की सुरक्षा करना, अंतर-क्षमता को समझना इत्यादि उद्देश्य थे परन्तु 2005 के मालाबार अभ्यास के तत्पश्चात से अमेरिका का द्रष्टिकोण चीन के प्रति बदल गया। तब से मालाबार अभ्यास का मुख्य उद्देश्य चीन का हिंदमहासागर और प्रशांत महासागर में बड़ते हस्तक्षेप को काउंटर करना हैं।[11] अमेरिका का विचार हैं की चीन जिस प्रकार से वर्तमान में एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है, वह विश्व के लिए एक खतरे के रूप में विकसित हो रहा हैं। क्योंकि चीन विस्तारवादी नीतियों में विश्वास करता हैं, जो धीरे-धीरे करके हिंद - प्रशांत महासागर क्षेत्र में अपनी स्वायत्तता स्थापित करना चाहता हैं। चाहें वह दक्षिण-चीन सागर हो या भारत के साथ सीमा विवाद हो या फिर हिंद महासागर में चीन के बड़ते प्रयास हों इत्यादि मुख्य उदहारण हैं। इन क्षत्रों में चीन बहुत ही आक्रमण रूप से अपना हस्तक्षेप बडाने की कोशिसे कर रहा है। सन् 2005 के बाद से अमेरिका और भारत ने मालाबार अभ्यास को एक कूटनीतिक तरीके से इस्तेमाल किया हैं जिससे की चीन को काउंटर किया जा सकें।

मालाबार 2007 के आयोजन में भारत और अमेरिका के निर्णय पर सितम्बर 2007 में जापान, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर को आमंत्रित किया गया।[12] मालाबार 2007 का आयोजन पहली बार हिंदमहासागर से अलग स्थान, जापानी शहर ओकीनावा के नजदीक समुन्द्र में आयोजित किया गया था। ओकीनावा क्षेत्र चीन की भूमि के काफी करीब हैं। इस अभ्यास में केवल भारत और अमेरिका ही नहीं थे बल्कि जापान, ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर जैसे देश भी शामिल थे। इस अभियान में 26 युध्दपोत, 175 से अधिक विमान और 20,000 कर्मचारी पांचो देशो के शामिल थे।[13] जिसका चीन को काफी आघात हुआ और इस अभ्यास का विरोध भी जताया। चीन ने ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर को कूटनीतिक रूप से धमकाया। जिसके कारण ऑस्ट्रेलिया काफी डर गया था। चीनी धमकी के आधार पर ऑस्ट्रेलिया ने स्वयं को 2007 मालाबार अभ्यास से अलग कर लिया था। चीन की धमकियों के आधार पर भारत ने 2008 में होने वाले मालाबार अभ्यास में जापान के शामिल होने से इन्कार कर दिया।[14] सन् 2009 में जापान को दुबारा से मालाबार अभ्यास में शामिल किया गया। तीनों देश भारत, अमेरिका, और जापान ने दुबारा से ओकीनाव के तट पर मालाबार 2009 का आयोजन किया, इस अभ्यास के दौरान समुंद्री साझेदारी को बढावा दिया। इसके तत्पश्चात भारत द्वारा एक बार फिर से सन् 2011 में होने वाले मालाबार नौसेनिक अभ्यास के लिए आमंत्रित किया और सन् 2014 में भी जापान द्वारा मालाबार अभ्यास में भाग लिया।[15]

भारत और जापान के मध्य रणनीतिक अभिसरण का स्तर 2014 में प्रारम्भ हुआ। सितम्बर 2014 में

भारतीय प्रधानमंत्री मोदी और जापानी प्रधानमंत्री शिंजो अबे द्वारा "द्विपक्षीय समुद्री अभ्यासों के नियमिकरण" और साथ ही साथ "भारत में जापान की सक्रीय भागीदारी" दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये। जून 2015 में होनोलूलू में आयोजित त्रिपक्षीय सामरिक वार्ता के दौरान मालाबार अभ्यास की 2015 वीं श्रंखला में टोक्यो की स्थायी सदस्यता के रूप में भागीदारी पर सहमती व्यक्त की। जुलाई 2017 में आयोजित होने वाले इस वर्ष के मालाबार त्रिपक्षीय नौसेनिक अभ्यास के दौरान एक पर्यवेक्षक के रूप में ऑस्ट्रेलिया ने संकेत दिया हैं की ऑस्ट्रेलिया, भारत के साथ मालाबार अभ्यास में भागीदारी के लिए उत्सुक है।[16] हालांकि 2017 मालाबार अभ्यास के नेतृत्व में भारत ने चतुष्कोणीय अभ्यास में शामिल होने से ऑस्ट्रेलिया के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया था, क्योंकि ऑस्ट्रेलिया ने 2007 के निमंत्रण को चीन की आपत्तियों के आधार पर निर्णय को बदल दिया था और भारत का, मालाबार अभ्यास में ऑस्ट्रेलिया को शामिल करने का कारण बहस का मुद्दा है।[17] वर्तमान में चीन वैश्वक खतरे के रूप में उभर रहा हैं। चीन का उद्देश्य हिंद और प्रशांत महासागर क्षेत्र में अपनी स्वयत्तता स्थापित करना हैं। अर्थात धिरे-धिरे करके चीन दक्षिण चीन सागर के बाद से चीन की पहुंच ऑस्ट्रेलिया तक विस्तृत हो सकती हैं । इसी कारण ऑस्ट्रेलिया मालाबार 2017 में शामिल होने के लिए काफी उत्सुक है।

भारत और ऑस्ट्रेलिया, समुंद्री सुरक्षा और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में नेवीगेशन की स्वतन्त्रता पर चीन की समुन्द्र में बडती स्वयत्ता और चीन के हमले से सतर्क हैं। इस आधार पर वर्तमान में दोनों देशों के मध्य समुंद्री सहयोग की आवश्यकता को मजबूत किया हैं और दोनों ने संयुक्त नौसेनिक युध्द अभ्यास के संचालन पर सहमती व्यक्त की हैं।[18]

2017 मालाबार नौसेनिक अभ्यास: चीनी चिंता

जुलाई में आयोजित अमेरिका, भारत और जापान द्वारा बंगाल की खाड़ी में मालाबार नौसेनिक अभ्यास का आयोजन किया गया था। मालाबार अभ्यास उस समय आयोजित किया गया जब भारत और चीन के मध्य डोकलाम भूमि विवाद जारी था।[19] 2017 के मालाबार अभ्यास का अधिक महत्व हैं क्योंकि भारतीय, जापानी और अमेरिकी नौसेनाओं ने एक साथ अभ्यास किया। इस अभ्यास द्वारा मुख्य रूप से विमान वाहक संचालन, वायु रक्षा, एंटीसबमरिन युध्द, पनडुब्बी खोज और इसके अतिरिक्त संयुक्त कार्य पर बल दिया गया। इस अभ्यास का उद्देश्य तीनों देशों की नौसेनाओं के मध्य परस्पर कार्य क्षमता को बढावा देना और समुंद्री सुरक्षा और प्रक्रियाओं की आम सूझ-बूझ से परिचित होना हैं।[20]

अमेरिकी सुपर वाहक यूएसएस निमित्ज जिसका 1,00000 टन भर हैं, आईएनएस विक्रमादित्य जिसे भारत ने रूस से लिया है। इसका भार 44,570 टन का है, और जापान का 27,000 टन भर का हेलीकॉप्टर वाहक जेएस आइज्रूमो को पहली बार इस अभ्यास में तीनों देशों के युद्धपोतो को शामिल किया हैं। इस कारण

चीन 2017 के मालाबार अभ्यास से काफी चिंतित है और इस बार के मालाबार अभ्यास का मुख्य उद्देश्य हिंदमहासागर में स्थित पनडुब्बियों का शिकार करना हैं। पन्दुब्बियां पानी के अन्दर जाकर छुपी होती है। पानी के अंतगर्त पनडुब्बियों को की प्रकार से खोजा जाता है और कैसे इस पर आक्रमण कर इसे समाप्त करना चाहिए, का प्रशिक्षण किया गया।[21]

10-17 जुलाई तक मालाबार अभ्यास बंगाल की खाड़ी में आयोजित किया गया। 10-13 जुलाई के मध्य अभ्यास का आयोजन चेन्नई में किया गया और जबकि 14-17 जुलाई के मध्य समुन्द्र में आयोजित किया गया। मालाबार 2017 के दौरान भारतीय नौसेना का प्रतिनिधित्व विमानवाहक आईएनएस विक्रमादित्य पोत, भारतीय नौसेना जहाज जलाशवा निर्देशित मिसाइल विध्वंशक, 'रणवीर' स्वदेश निर्मित स्टील्थ फ्रिगेट्स, 'शिवालिक' और 'शहाद्री' शिन्धुघोष वर्ग की पनडुब्बी लॉन्ग रेंज, मेरीटाइम पेट्रोल एयरक्राफ्ट पी-8 पोसाइडन आदि कर रहे हैं। अमेरिका नौसेना का प्रतिनिधित्व निमित्स कैरियर स्ट्राइक ग्रुप के जहाज और अमेरिका के 7 वे बेड़े की अन्य इकाइयों सहित विभिन्न हेलीकॉप्टर, पनडुब्बी, समुंद्री गश्ती विमान इत्यादि ने किया। जापानी नौसेना का प्रतिनिधित्व विमान वाहक पोत इज़ुमो जेएस, एसएच 60000 हेलीकाप्टर वाहक हैं। एक मिसाइल विध्वंशक जिसमें एसएच 60000 हेलिकॉप्टर एकीकृत है, इत्यादि विमानों को शामिल किया गया हैं।[22]

इस मालाबार अभ्यास में तीनों देशों के 95 विमान, 16 जहाज और और पनडुब्बीयों ने भाग लिया था। इस अभ्यास के संचालन का मूल महत्व यह था कि इस दौरान अमेरिका के पांचवें और सतबे युद्धपोतो को सामिल किया गया था, जिसका मुख्य उद्देश्य था की भारत भविष्य में दोनों युद्धपोतो की सहयता से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बड़ते विस्तारवादी क़दमों को सिमित किया जा सकें।[23]

वर्तमान में भारत हिंद महासागर में चीनी जहाजों की बडती उपस्थिति से सिंचित है। 2013 के बाद से हिंद महासागर में चीन छः पनडुब्बीयां तैनात करने की रिपोर्ट सामने आई थी। पाकिस्तान और श्रीलंका के साथ चीन की बड़ती निकटता भी भारत के लिए चिंता का एक विषय हैं। इस प्रकार 2017 मालाबार, हिंदमहासागर और बंगाल की खाड़ी में भारत की उपस्थिति बढानें में एक ठोस कदम के रूप में साबित होगा।[24] चीनी नौसेना हिंदमहासागर में अपने प्रयास बड़ा रहीं हैं और साथ ही चीन इस मालाबार अभ्यास का निरिक्षण भी कर रहा हैं। जब से भारत में 2017 मालाबार अभ्यास हुआ है तब से चीन के दो महीने के अंतगर्त भारतीय नौसेना ने एक दर्जन से अधिक चीनी युद्धपोतों को देखा है, जिसमे पनडुब्बियां, विध्वंशक और बुध्दिमत्ता वाले जहाज शामिल हैं। इस अभ्यास के कार्यरत के दौरान चीन ने भारत के समुंद्री पडोसी उपमहाद्वीपों के सागरों में अपनी नौसेनिक उपस्थिति बड़ा दी हैं। जिसमे ल्युयैन्ग तृतीय श्रेणी विध्वंशक, जल

शोधन जहाजों और ख़ुफ़िया दल के जहाजो, हैविगिंग को सामिल किया है। चीन के हिंदमहासागर में बड़ते प्रयासों को भारत इस अभियान के माध्यम से निरिक्षण करने में सक्षम हो रहा है। जब से 2017 मालाबार अभ्यास समाप्त हुआ है तब से दो दर्जन से अधिक चीनी विमानों को देखा गया हैं।[25]

2017 के मालाबार से चीन को क्या खतरा उत्पन्न हो सकता है?

2017 मालाबार अभ्यास के दौरान ऐसे युद्धपोतों लड़ाकू विमानों का प्रयोग किया गया है जिसके माध्यम से भारत समुंद्र में छिपी पनडुब्बियों की खोज कर सकता हैं। इस अभ्यास के दौरान "Posaidan-8 long-range maritime portal aircraft" का प्रयोग किया है। इस विमान को भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका से ख़रीदा था। यह एक ऐसा विमान है जो एंटी-पनडुब्बी युद्ध और समुंद्री निगरानी में काफी माहिर है। इसके अतिरिक्त जापान का आईएस इज़ुमो, इसका निर्माण सबमरिन या पनडुब्बियों पर आक्रमण करने के लिये किया गया है। चीन भारत के इस अभ्यास से काफी अधिक चिंतित भी हैं।[26]

वर्तमान में भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण है की भारत सबमरिन्स को काउंटर करना सीखें क्योंकि चीन की नवी भारतीय नवी से काफी शक्तिशाली हैं। इसी आधार पर चीन हिंदमहासागर में अपना हस्तक्षेप अधिक बड़ा रहा हैं। चीन का मानना हैं की यदि स्ट्रेट ऑफ़ मलक्का में कोई रूकावट उत्पन्न ना कर दे। क्योंकि चीन इस मार्ग के जरिये एशिया और अफ्रीका देशों में व्यापार करता है। सबसे महत्वपूर्ण इस मार्ग के जरिये चीन अरेबियन देशों से उर्जा का आयात 80% करता है। इसीलिए चीन हिंद महासागर में कूटनीतिक महाप्रयास (पल्सपोलिसी, 21वी सदी समुन्द्री गलियारा आदि) के माध्यम से हिंद महासागर में अपना अधिपत्य स्थापित करना चाहता है। चीन की एर्थ व्यवस्था मुख्य रूप से व्यापार पर आधारित है भविष्य में चीन को व्यापार से सम्बन्धित कोई भी समस्या उत्पन्न ना हो सकें, इसलिए चीन हिंद महासागर में अपनी सैना तैनात कर अपनी स्वायत्तता को स्थापित करने की कोशिस कर रहा है। भारत, चीन की इस प्रतिक्रिया का उत्तर अपने मालाबार अभ्यास द्वारा दे रहा है।

आईएनएस जलाशवा यह एक अम्फिबिऔस ट्रांसपोर्ट डॉक है। इस बिमान के विभिन्न कार्य है जैसे- हजारों सेनिकों एक स्थान से दूसरें स्थान पर हस्तान्तरण करना, हेलिकोप्टर को जमीन पर उतारना इत्यादि विभिन्न महत्वपूर्ण कार्य हैं। भारतीय नेवी का द्वितीय सबसे बड़ा विमान है। जिसे भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका से ख़रीदा था।[27] फ्रिगेट्स, इसका नैसेना में काफी बड़ा महत्व है। भारत के पास 14 गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट्स है। यह चार प्रकार की है: शिवालिका, तलवार ब्रह्मपुत्र, और गोदावरी। शिवालिक सबसे बड़ी फ्रिगेट्स है, यह पनडुब्बियों को डूबने में काफी सक्षम होती हैं।[28] इन सभी विमानों के आधार पर भारत, चीन के

हिंदमहासागर में बड़ते प्रयासों को नियंत्रित कर सकता है।

निष्कर्ष

मालाबार अभ्यास के माध्यम से हिंद महासागर और प्रशांत महासागर में उत्पन्न समस्याओं (समुंद्री डाकू, आतंकवादी, सुनामी का आना इत्यादि) और चीन की हिंद महासागर में विस्तृत स्वयत्तता को सीमित करना हैं। वर्तमान और भविष्य के आने वाले समय में चीन वैश्विक स्तर पर एक खतरे के रूप में चुनौती के रूप में उभर रहा हैं। महासागरों में बड़ती चीन कि प्रतिद्वंदिता की प्रतिक्रिया करने के लिये तीनों राष्ट्रों ने मालाबार अभ्यास के माध्यम से चीन को चुनौती देने व चीन को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया है।

सन्दर्भ सूचि

1. IAS Parliament information is a blessing (2017): Malabar Exercise 2017 at http://www.iasparliament.com/blogs/pdf/malabar-exercise-2017
2. Khurana, G.S. (2007): Joint Naval Exercises: A Post-Malabar-2007 Appraisal for India, Institute of Peace and Conflict Studies at http://www.ipcs.org/pdf_file/issue/49320093IPCS-IssueBrief-No52.pdf
3. Miller, J.B. (2017): The US-Japan-India Relationship: Trilateral Cooperation in the Indo-Pacific, Foreign Experts Perspective, at http://www.nids.mod.go.jp/english/publication/backnumber/pdf/20171108.pdf
4. Friedman, George (2016): The significance of U.S, India, and Japanese naval exercise at https://geopoliticalfutures.com/the-significance-of-us-indian-and-japanese-naval-exercises/
5. Panda, A. (2017): US, Japan, India, and Australia Hold Working-Level Quadrilateral Meeting on Regional Cooperation, at https://thediplomat.com/ HYPERLINK"https://thediplomat.com/2017/11/us-japan-india-and-australia-hold-working-level-quadrilateral-meeting-on-regional-cooperation/"
6. Ibid
7. Singh, R. (2017): India, US, Japan to begin Malabar drills: All you need to about the naval exercise in Indian Ocean, at https://www.hindustantimes.com/india-news/india-us-japan-to-begin-malabar-drills-all-you-need-to-about-the-naval-exercise-in-indian-ocean/storyssB13XXA3rmYZ8nLyJ0nTP.html
8. Das, P. & Mishra, Sylvia (2015): India's Reluctance on Multilateral Naval Exercises, at https://thediplomat.com/2015/07/indias-multilateral-naval-reluctance/
9. Ibid
10. India Today (2017): What is Malabar naval exercise? Why is Chinese media considering it a threat?, at https://www.indiatoday.in/fyi/story/malabar-exercise-2017-india-us-japan-china-naval-navy-ins-vikramaditya-1023389-2017-07-10
11. Ibid
12. Pant, H. V. (2017): India, Japan, Australia, and the US: The Return of Asia's 'Quad', at https://thediplomat.com/2017/04/india-japan-australia-and-the-us-the-return-of-asias-quad/

13. Ibid
14. Ibid
15. Ibid
16. Ibid
17. Chin, B. (2017): The 2017 Malabar Exercises – Testing Waters, Institute of South Asian Studies, at https://www.isas.nus.edu.sg/ISAS20Reports/ISAS%20Briefs%20No.%20499-%20The%202017%20Malabar%20Exercises-Testing%20Waters.pdf
18. Ibid
19. Ibid
20. Chandramohan, B. (2017): The Emerging Strategic Importance of India's Joint Military Exercises, Independent Strategic Analysis of Australia's Global Interest, at http://www.futuredirections.org.au/wp-content/uploads/2017/09/The-Emerging-Strategic-Importance-of-India%E2%80%99s-Joint-Military-Exercises.pdf
21. Sen, S. (2017): Malabar exercises: India, America, Japan, to focus on anti-submarine warfare, launch of military operations, at https://www.indiatoday.in/india/story/malabar-exercise-india-united-states-japan-indian-ocean-region-military-exercise-chinese-submarines-1022852-2017-07-06
22. Malabar Naval Execise-2017 (2017) at http://www.edristi.in/hi/Malabar Naval Execise -2017/
23. Ibid
24. Ibid
25. Singh, A. (2017): Malabar naval exercise: Powerplay in the Indo-Pacific region, at https://www.scribd.com/document/369787299/Malabar-naval-exercise-Powerplay-in-the-Indo-Pacific-region-ORF-pdf
26. Ibid
27. Swant, G. (2017): India-US-Japan's Malabar naval exercise is a message gift-wrapped for China, at https://www.indiatoday.in/mail-today/story/malabar-naval-exercise-uss-nimitz-india-usa-japan-indian-ocean-china-1024661-2017-07-17
28. Tri-nation Malabar naval exercise begins (2017), at http://www.thehindu.com/news/national/india-us-japan-begin-malabar-naval-exercise/article19250306.ece

IJCRT